5

सुल्तान इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)

वस्तुतः दिल्ली का पहला सुल्तान इल्तुतमिश था। **उसने सुल्तान के पद की स्वीकृति किसी गोर के शासक से नहीं बल्कि खलीफा से प्राप्त की।** इस प्रकार, वह कानूनी तरीके से दिल्ली का प्रथम स्वतन्त्र सुल्तान हुआ। व्यावहारिक दृष्टि से उसने दिल्ली की गद्दी के दावेदार ताजुद्दीन एल्दौज और नासिरुद्दीन क़ुबाचा को समाप्त किया, भारत के तुर्की राज्य को संगठित किया, उसे मंगोल-आक्रमण से बचाया, राजपूतों की शक्ति को तोड़ने का प्रयत्न किया, सुल्तान के पद को वंशानुगत बनाया, दिल्ली को तुर्की राज्य की राजधानी के अनुरूप वैभवपूर्ण बनाया और अपने नाम के सिक्के चलाये।

इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ई. में हुए अन्हिलवाड़ के युद्ध के पश्चात खरीदा था। इस कारण वह एक गुलाम का गुलाम था। परन्तु अपनी योग्यता के कारण उसने अपने स्वामी से पहले दासता से मुक्ति प्राप्त कर ली थी। **मोहम्मद गोरी ने अपने समय में ही से दासता से मुक्त कर दिया था।** इस कारण, ऐबक की भाँति सिंहासन पर बैठने के समय वह गुलाम न था बल्कि उससे बहुत पहले दासता से मुक्त हो चुका था। यह उसकी योग्यता का प्रमाण था कि जब गोरी ने अपने सबसे अधिक विश्वासपात्र और योग्य गुलामों; से—एल्दौज, कुबाचा और ऐबक को भी दासता से मुक्त नहीं किया था, उसने इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था।

Scanned with CamScanner

अधिकार करना अवैध नहीं माना जा सकता। आरामशाह को लाहौर के सरदारों का समर्थन प्राप्त था और इल्तुतमिश को दिल्ली के सरदारों का। इल्तुतमिश आरामशाह के मुकाबले अधिक योग्य और अनुभवी था। उस समय की परिस्थितियों में उसका समर्थन तुर्की राज्य के हित में था। इस कारण, आरामशाह को समाप्त करके इल्तुतमिश का दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना न अवैध था और न अनुचित।

डॉ. आर. पी. त्रिपाठी के अनुसार इल्तुतमिश का दिल्ली के सिंहासन पर न्यायोचित अधिकार था क्योंकि वह दिल्ली के सरदारों द्वारा चुना गया था; वह एक योग्य सेनापति और आज्ञापालन कराने की शक्ति रखने वाला प्रशासक था; तथा, उसने बगदाद के खलीफा से अपने सुल्तान के पद की स्वीकृति प्राप्त करने में सफलता पायी थी।

प्रारम्भिक जीवन

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का वंश इल्बारी-तुर्क था। उसका पिता इलामखाँ अपने कबीले का प्रधान था। इल्तुतमिश सुन्दर और बुद्धिमान था तथा उसका पिता प्रेमवश उसे घर से बाहर नहीं जाने देता था। इस कारण वह अपने भाइयों की ईर्ष्या का पात्र हो गया जिन्होंने उसे धोखे से एक मेले में ले जाकर एक गुलामों के व्यापारी को बेच दिया। उसके पश्चात् इल्तुतमिश को दो बार फिर बेचा गया और अन्त में जमालुद्दीन मुहम्मद नामक एक व्यापारी उसे बेचने के लिए गजनी ले गया। वहाँ उसे सुल्तान मोहम्मद गोरी ने खरीदना चाहा परन्तु मुँहमाँगी धनराशि न मिलने के कारण जमालुद्दीन ने उसे बेचने से इन्कार कर दिया जिसके कारण गोरी ने उसे गजनी में बेचने पर पाबन्दी लगा दी। अन्त में, कुतुबुद्दीन ऐबक की दृष्टि उस पर पड़ी और क्योंकि उसको गजनी में खरीदना और बेचना अवैध था, इस कारण उसे दिल्ली ले जाया गया जहाँ ऐबक ने उसे खरीद लिया। इल्तुतमिश ने किस प्रकार और क्या शिक्षा प्राप्त की, इसके बारे में पता नहीं लगता। परन्तु वह शिक्षित व्यक्ति, साहसी सैनिक और योग्य नेता था। ऐबक ने उसे आरम्भ से ही 'सर-जाँदार' (अंगरक्षकों का प्रधान) का महत्त्वपूर्ण पद दिया। एक के पश्चात् एक पद से उन्नति करता हुआ वह बहुत शीघ्र 'अमीरे शिकार' के पद पर पहुँच गया। ग्वालियर के किले की विजय के पश्चात् उसे वहाँ का किलेदार बनाया गया। उसके पश्चात् उसे बरन (बुलन्दशहर) का इक्ता (सूबा) सौंपा गया और अन्त में उसे दिल्ली राज्य का सबसे महत्त्वपूर्ण बदायूँ का इक्ता सौंपा गया। ऐबक ने अपनी एक पुत्री का विवाह भी उसके साथ कर दिया। 1205-1206 ई. में खोक्खर जाति के विद्रोह को दबाने के अभियान में इल्तुतमिश सुल्तान मोहम्मद गोरी और ऐबक के साथ था। इल्तुतमिश ने इस युद्ध में जिस साहस और कौशल का परिचय दिया उससे प्रसन्न होकर गोरी ने ऐबक को उसके साथ भला व्यवहार करने की सलाह दी और उसे दासता से मुक्त करने के आदेश दिये। ऐबक की मृत्यु के पश्चात् सिपहसालार अमीर अली इस्माइल ने दिल्ली के तुर्की सरदारों की सम्मति लेकर इल्तुतमिश को दिल्ली आने के लिए निमन्त्रण दिया। इल्तुतमिश ने दिल्ली पहुँचकर अपने को सुल्तान घोषित कर दिया, और 1211 ई. में आरामशाह को परास्त किया तथा उसका वध कर दिया।

कठिनाइयाँ

इल्तुतमिश ने ऐबक से एक अरक्षित सिंहासन और छोटा राज्य प्राप्त किया। उसने आरामशाह को युद्ध में परास्त करके समाप्त कर दिया था परन्तु जब तुर्की सरदार दिल्ली में

Scanned with CamScanner

एकत्र हुए तब उनमें से कुछ ने उसे सुल्तान मानने से इन्कार कर दिया। वे दिल्ली से बाहर चले गये और विद्रोह की तैयारी करने लगे। इल्तुतमिश ने अपनी सेना लेकर उन पर आक्रमण किया और जूद के युद्ध में उन्हें परास्त करके उनमें से अधिकांश का वध कर दिया। युद्ध को जीतकर और विद्रोह को दबाकर भी जो राज्य उसे प्राप्त हुआ वह पूर्व में बनारस से लेकर पश्चिम में शिवालिक पहाड़ियों तक ही सीमित था। गजनी का शासक एल्दौज दिल्ली-राज्य को अपनी अधीनता में मानता था। उसने ऐबक के समय में भी यह दावा किया था और उससे युद्ध किया था। परन्तु ऐबक उसका दामाद था जबकि इल्तुतमिश से उसका कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध न था इसके अतिरिक्त, ख्वारिज्मशाह के बढ़ते हुए दबाव के कारण उसे पंजाब की ओर बढ़ने के लिए बाध्य होना पड़ रहा था। इन परिस्थितियों में गजनी और दिल्ली के शासकों की शत्रुता का बढ़ना स्वाभाविक हो गया था। **नासिरुद्दीन कुबाचा** ने कुतुबुद्दीन से झगड़ा नहीं किया था परन्तु वह इल्तुतमिश की कठिनाइयों से लाभ उठाकर अपने राज्य का विस्तार कर रहा था। उच्छ, सिन्ध और मुल्तान के अतिरिक्त उसने भटिण्डा, कुहराम तथा सरस्वती को अपने अधिकार में कर लिया था। आरामशाह की मृत्यु के पश्चात् उसने लाहौर को भी जीत लिया। बंगाल और बिहार दिल्ली राज्य से पृथक् हो गये थे और **लखनौती में अलीमर्दान ने अपने को स्वतन्त्र शासक बना लिया था**। हिन्दू **राजपूत-शासक** पुनः शक्ति एकत्र कर रहे थे और विभिन्न स्थानों से तुर्कों को बाहर निकाल दिया गया था। जालौर, रणथम्भौर और ग्वालियर स्वतन्त्र हो गये थे और दोआब में तुर्की आधिपत्य को कायम रखना कठिन हो रहा था। ऐसी कठिन परिस्थितियों में चंगेजखाँ के नेतृत्व में **मंगोल आक्रमण का भय** भी इल्तुतमिश के समय में उपस्थित हुआ। इसके अतिरिक्त ऐबक का **दिल्ली का राज्य एक अस्थिर फौजी जागीर की भाँति था जिसमें स्थायित्व का अभाव था** और जिसे केवल शक्ति के आधार पर ही कायम रखा जा सकता था। इस प्रकार ये सभी परिस्थितियाँ संकटपूर्ण थीं। परन्तु इल्तुतमिश ने कौशल, साहस और शक्ति से इन सभी संकटों का मुकाबला किया तथा अन्त में सफलता प्राप्त की।

कार्य

1. चालीस गुलाम-सरदार के गुट (तुर्कान-ए-चिहालगानी) का संगठन—जिस समय इल्तुतमिश सिंहासन पर बैठा उस समय कुछ **कुत्बी**-सरदारों (कुतुबुद्दीन ऐबक के सरदार) और **मुइज्जी** (मोहम्मद गोर के सरदार) सरदारों ने उसका विरोध किया। उसने उनके विद्रोह को दबा दिया परन्तु वह उन पर पूर्ण विश्वास नहीं कर सका। इस कारण उसने अपने प्रति वफादार अपने स्वयं के गुलाम-सरदारों का एक गुट बनाया जिसे **तुर्कान-ए-चिहालगानी** पुकारा गया। वे सभी सरदार उसके द्वारा गुलामों की भाँति खरीदे गये थे। उन्हें उनकी योग्यतानुसार पद दिये गये और इस प्रकार, शासन में उनसे सहयोग लिया गया। वे सभी सरदार पूर्णतया इल्तुतमिश पर निर्भर थे और उसके प्रति वफादार रहे जिससे उसे **कुत्बी** और **मुइज्जी** सरदारों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रही।

2. एल्दौज की पराजय—एल्दौज के प्रति इल्तुतमिश का व्यवहार सफल कूटनीतिज्ञता का रहा। जब वह सिंहासन पर बैठा तो एल्दौज ने उसे अपने अधीन मानते हुए छत्र, दण्ड आदि राजचिह्न भेजे। इल्तुतमिश ने उन्हें शान्ति से स्वीकार कर लिया। एल्दौज के सैनिकों ने जब कुबाचा से लाहौर और पंजाब के अधिकांश भाग को छीना तब भी इल्तुतमिश ने उसकी

Scanned with CamScanner

ओर ध्यान न दिया। वह अपनी राजधानी और उसके निकट के क्षेत्रों में अपनी स्थिति को दृढ़ करता रहा। इसके अतिरिक्त उसने सरस्वती, कुहराम और भटिण्डा पर अधिकार कर लिया जिससे उसकी पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा हो सके। इस प्रकार इल्तुतमिश ने एल्दौज को उस समय तक झगड़ा करने का अवसर नहीं दिया जब तक उसने अपनी राजधानी में और पूरब की ओर बनारस तक के क्षेत्र में अपनी स्थिति को दृढ़ नहीं कर लिया।

1215 ई. में ख्वारिज्मशाह से पराजित होकर एल्दौज लाहौर भाग आया और उसने थानेश्वर तक के पंजाब-प्रदेश पर अधिकार कर लिया। उसने दिल्ली के सिंहासन पर अपना दावा किया। इस अवसर पर इल्तुतमिश ने उससे अन्तिम निर्णय करने की तैयारी की और अपनी सेना को लेकर आगे बढ़ा। 1215-1216 ई. में तराइन के युद्ध में एल्दौज को परास्त करके कैद कर लिया गया। उसे कैद करके बदायूँ भेज दिया गया और उसी वर्ष उसका वध कर दिया गया। **एल्दौज की समाप्ति से इल्तुतमिश** को दो लाभ हुए। **प्रथम, उसका मुख्य शत्रु समाप्त हो गया और द्वितीय, दिल्ली का गजनी से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।** एल्दौज के पश्चात् गजनी का कोई सुल्तान दिल्ली के सिंहासन का दावा नहीं कर सका।

3. मंगोल आक्रमण का भय—इल्तुतमिश के समय में भारत के तुर्की राज्य को मंगोलों के आक्रमण की सम्भावना से एक महान् संकट उत्पन्न हुआ। मंगोलों के महान् नेता चंगेजखाँ ने गोबी के रेगिस्तान और एशिया के घास के मैदान (Steppes) की समस्त बर्बर जातियों को अपने नेतृत्व में संगठित करके चीन, तुर्किस्तान, इराक, मध्य-एशिया, पर्शिया आदि को अपने पैरों तले रौंद दिया। उसने अलाउद्दीन मुहम्मद ख्वारिज्मशाह का सम्पूर्ण साम्राज्य नष्ट कर दिया। इस कारण जब ख्वारिज्मशाह स्वयं कैस्पियन समुद्र-तट की ओर भाग गया, उसका सबसे बड़ा पुत्र जलालुद्दीन मंगबर्नी भागकर भारत की ओर आया। चंगेजखाँ ने खुरासान और अफगानिस्तान होते हुए सिन्धु नदी के तट तक उसका पीछा किया। परन्तु वहाँ आकर वह रुक गया। उस समय से पंजाब और सिन्ध-सागर के दोआब का ऊपरी भाग जलालुद्दीन मंगबर्नी, कुबाचा, मंगोल-अधिकारियों और खोक्खर जाति के संघर्ष का रण-क्षेत्र बन गया। इल्तुतमिश ने उनके झगड़ों में फँसना पसन्द नहीं किया और स्थिति को चुपचाप देखता रहा। जलालुद्दीन मंगबर्नी एक साहसी और योग्य नेता था। सिन्धु नदी के तट पर अपनी छोटी-सी सेना को लेकर उसने जिस प्रकार मंगोलों का मुकाबला किया और जिस साहस से उसने सिन्धु नदी को पार किया उससे चंगेजखाँ स्वयं इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने अपने पुत्रों से कहा कि "एक पिता को ऐसा पुत्र चाहिए।" इस कारण जलालुद्दीन चुप बैठने वाला न था। उसने सिन्ध-सागर-दोआब पर अधिकार किया, खोक्खर नेता राय खोक्खर की पुत्री से विवाह किया और सियालकोट जिले में पस्तूर को जीत लिया। उसने लाहौर की ओर अपने कदम बढ़ाये परन्तु साथ ही साथ मंगोल के विरुद्ध इल्तुतमिश से सहायता भी माँगी। इल्तुतमिश के सम्मुख बड़ी कठिनाई थी। एक शरणार्थी मुसलमान शाहजादे की सहायता की माँग को ठुकराना एक मुसलमान सुल्तान के लिए अपवाद का कारण बन सकता था। परन्तु जलालुद्दीन को सहायता देने का परिणाम उस चंगेजखाँ से शत्रुता मोल लेना था जिसके सम्मुख बड़े-बड़े साम्राज्य झुकते चले गये थे। अन्त में, इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन के दूत का वध करा दिया और जलालुद्दीन को शरण देने से नम्रतापूर्वक इन्कार कर दिया। उसने जलालुद्दीन से प्रार्थना की कि वह पंजाब को खाली कर दे परन्तु साथ ही साथ उसने एक बड़ी सेना भी युद्ध के लिए तैयार कर ली।

Scanned with CamScanner

जलालुद्दीन ने इल्तुतमिश से युद्ध करना उचित न समझा और खोक्खरों के शत्रु कुबाचा पर दबाव डाला। उसने कुबाचा को उच्छ के निकट परास्त किया और उसकी शक्ति को काफी हानि पहुँचायी। अन्त में सिन्ध के दक्षिणी भाग को लूटकर और अपने कुछ अधिकारियों को भारत में छोड़कर जलालुद्दीन 1224 ई. में पर्शिया भाग गया। जब तक जलालुद्दीन भारत में रहा तब तक इल्तुतमिश ने उसे कोई सहायता नहीं दी, और जब तक चंगेजखाँ जीवित रहा तब तक उसने सिन्धु नदी के पश्चिम में राज्य-विस्तार की लालसा नहीं की तथा अन्य किसी भी प्रकार से मंगोलों को असन्तुष्ट करने का कारण उत्पन्न नहीं किया। यद्यपि चंगेजखाँ का उद्देश्य भारत पर आक्रमण करना न था, परन्तु यदि इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन को सहायता दी होती तो सम्भवतया वह दिल्ली पर आक्रमण करता। ऐसी स्थिति में चंगेजखाँ जैसे महान् विजेता के विरुद्ध इल्तुतमिश की विजय की सम्भावना नहीं थी। यह सम्भव था कि भारत का तुर्की राज्य उस मंगोल-आक्रमण के तूफान के कारण नष्ट हो जाता। इस प्रकार **इल्तुतमिश की दूरदर्शिता ने तुर्की राज्य को मंगोल आक्रमण से बचा लिया। यही नहीं बल्कि उसने बाद में उससे उत्पन्न परिस्थितियों से लाभ उठाया।**

4. कुबाचा की पराजय—मोहम्मद गोरी का एक मुख्य गुलाम नासिरुद्दीन कुबाचा भी था जिसे उच्छ की सूबेदारी दी गयी थी। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक को तंग नहीं किया परन्तु इल्तुतमिश के गद्दी पर बैठते ही उसने सिन्ध-सागर-दोआब-सरस्वती, भटिण्डा और पंजाब में लाहौर को जीत लिया। इस कारण कुबाचा इल्तुतमिश का एक प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी था जो कभी भी खतरनाक सिद्ध हो सकता था। एल्दौज ने लाहौर को कुबाचा से छीन लिया था परन्तु जब वह इल्तुतमिश से परास्त हो गया तब कुबाचा ने लाहौर को पुनः अपने अधीन कर लिया। इल्तुतमिश ने उस समय उस ओर ध्यान नहीं दिया परन्तु 1217 ई. में उसने लाहौर को कुबाचा से छीन लिया। तब भी कुबाचा मुल्तान, उच्छ, सिन्ध और सिन्ध-सागर-दोआब का स्वामी रहा। जलालुद्दीन मंगबर्नी के भारत में भागकर आने का सबसे अधिक कुप्रभाव कुबाचा की शक्ति पर पड़ा। जलालुद्दीन ने सिन्ध-सागर-दोआब को उससे छीन लिया, उसके शत्रु खोक्खरों की सहायता की तथा जाने से पहले उच्छ को बरबाद और सिन्ध को दुर्बल करता गया। उसके पश्चात् उसके समर्थक और सरदार भी निरन्तर कुबाचा की शक्ति को सिन्ध में दुर्बल करते रहे जहाँ वे मंगोलों के दबाव के कारण आने के लिए बाध्य हुए थे। इस प्रकार जलालुद्दीन ने कुबाचा की शक्ति को बहुत हानि पहुँचायी। इल्तुतमिश ने इस स्थिति का लाभ उठाया। उसने पहले लाहौर को अधिकार में किया। इसके पश्चात् उच्छ और मुल्तान पर एक साथ आक्रमण किया। कुबाचा ने घबड़ाकर निचले सिन्ध में स्थित भक्खर के किले में जाकर शरण ली। तीन माह पश्चात् मई 1228 ई. में उच्छ पर इल्तुतमिश का अधिकार हो गया। कुबाचा की स्थिति भक्खर में भी दुर्बल हो गयी और उसने सन्धि की बातचीत आरम्भ की। इल्तुतमिश ने उसे बिना शर्त के आत्मसमर्पण करने की सलाह दी जिसे कुबाचा ने स्वीकार नहीं किया। अन्त में, निराश होकर कुबाचा ने सिन्धु नदी में डूबकर अपनी जान दे दी। इस प्रकार 1228 ई. में इल्तुतमिश का एक अन्य मुख्य शत्रु समाप्त हो गया। मुल्तान और उच्छ को दिल्ली राज्य में मिला लिया गया और अन्य बहुत-से महत्त्वपूर्ण किलों को जीतकर इल्तुतमिश ने पंजाब और सिन्ध में अपनी स्थिति को दृढ़ कर लिया। दिल्ली राज्य की सीमाएँ पश्चिम में मकरान तक हो गयीं तथा निचले सिन्ध में देबल के 'वली' (शासक) मलिक सिनानुद्दीन ने इल्तुतमिश के

Scanned with CamScanner